साधकों का
मासिक प्रेरणा

वार्षिक शुल्क रु. 30/-
आजीवन शुल्क रु. 500/-

बुद्धवर्ष 2555, ज्येष्ठ पूर्णिमा, 15 जून, 2011 वर्ष 40 अंक 12

For Patrika in various languages, visit: http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

हीनं धम्मं न सेवेय्य, पमादेन न संवसे।
मिच्छादिट्ठिं न सेवेय्य, न सिया लोकवड्ढनो॥
– धम्मपद १६७, लोकवग्गो

(पांच कामगुणों वाले) निकृष्ट धर्म का सेवन न करे, न प्रमाद में लिप्त हो। मिथ्यादृष्टि को न अपनाये, और अपने आवागमन को बढ़ाने वाला न बने।

बौद्धधर्म नहीं, धर्म

हमने देखा कि बुद्ध ने बौद्धधर्म नहीं, धर्म सिखाया। उन्होंने लोगों को बौद्ध नहीं, धार्मिक बनाया। उन्होंने किसी संप्रदाय की स्थापना नहीं की बल्कि सांप्रदायिकताविहीन सर्वव्यापी सार्वजनीन धर्म ही सिखाया।

हमने यह भी देखा कि नैसर्गिक नियमों पर आधारित धर्म सदैव और सर्वत्र एक जैसा होता है। वह सबका होता है। कभी भिन्न-भिन्न नहीं होता और न किसी एक संप्रदाय तक सीमित रहता है। जबकि संप्रदाय अनेक होते हैं, भिन्न-भिन्न होते हैं, भिन्न-भिन्न समुदायों के होते हैं। अलग-अलग मानव समूह के अलग-अलग संप्रदाय होते हैं। यदि संप्रदाय है तो वह सभी मानवों के लिए एक जैसा कदापि नहीं होता। वह भिन्न-भिन्न लोगों के लिए भिन्न-भिन्न होता है।

यह भी स्पष्ट है कि धर्म सार्वजनीन होने के कारण सब का होता है अतः सभी मानवों को एक साथ जोड़ता है। परंतु सभी संप्रदाय अपनी अलग-अलग मान्यता की बाड़ेबंदी के कारण समाज का विभाजन करते हैं। उनकी एकता को तोड़ते हैं।

देखें, संप्रदाय कैसे बनते हैं और किस प्रकार लोगों का विभाजन करके उनकी हानि करते हैं।

समाज में भिन्न-भिन्न लोगों की भिन्न-भिन्न अंधमान्यताएं होती हैं, भिन्न-भिन्न अंधविश्वास होते हैं, भिन्न-भिन्न कर्मकांड होते हैं। इनमें से किसी भी एक को मानने वालों का एक अलग संप्रदाय बन जाता है।

इससे यह कठिनाई भी उत्पन्न होती है कि ऐसी अंधमान्यताओं, अंधविश्वासों और अंधकर्मकांडों को मानने वाला व्यक्ति चाहे कितना ही दुराचारी क्यों न हो, वह इसी भ्रम-भ्रांति में जीता है कि वह बड़ा धार्मिक है। और धार्मिक होने के कारण जन्म-मरण से छुटकारा पा कर, मुक्त होने में पूरा विश्वास रखता है।

इसके अतिरिक्त समाज में अलग-अलग लोगों के अलग-अलग पूजनीय ईष्ट होते हैं। अपने ईष्ट का पूजन-भजन करने वाला व्यक्ति अथवा उसकी मूर्ति के सामने नाचने-गाने वाला व्यक्ति अपने आपको बड़ा धार्मिक मान बैठता है। वह इस भ्रम में डूबा रहता है कि इस पूजन-भजन, नर्तन-कीर्तन से मेरा ईष्टदेव प्रसन्न हो जायगा और मुझे सारे दुःखों से मुक्त कर देगा।

अन्य अनेक मान्यताएं--

उपरोक्त अंधमान्यताओं के अतिरिक्त और भी अनेक मान्यताएं अलग-अलग संप्रदायों में प्रचलित हैं। क्योंकि-- **मुण्डे मुण्डे मतिर्भिन्नः।** कुछ लोग मानते हैं कि आत्मा अमर है, कभी नहीं मरती। जिस शरीर ने आत्मा को धारण कर रखा है वह पंचभूतों से बना होने के कारण मरने पर पंचभूतों में ही समाहित हो जाता है। परंतु आत्मा का कुछ नहीं बिगड़ता। वह कभी नहीं मरती।

आत्मा के अमर अस्तित्व को स्वीकारने वालों की भी भिन्न-भिन्न मान्यताएं हैं। कुछ लोग मानते हैं कि आत्मा इतनी बड़ी है जितना बड़ा शरीर। कुछ लोग उसे अंगुष्ठ प्रमाण यानी अंगूठे जितनी बड़ी मानते हैं। कुछ अन्य लोग उसे तिल जितनी छोटी मानते हैं।

यही नहीं, उन दिनों अलग-अलग मान्यताओं को मानने वाले लोगों में परस्पर विवाद होता था कि --
(क) भवसंसरण से मुक्त हुए अरहंत का अस्तित्व कायम रहता है।
(ख) कायम नहीं रहता है।
(ग) कायम रहता भी है, नहीं भी रहता है।
(घ) न रहता है, न नहीं रहता है।

अलग-अलग पर्व-उत्सव, पूजा-पाठ, प्रार्थनाएं

भिन्न-भिन्न संप्रदायों के भिन्न-भिन्न व्रत-त्यौहार, पर्व-उत्सव होते हैं और उनके विभिन्न प्रकार के पूजा-पाठ, प्रार्थनाएं आदि होती हैं।

आगे चल कर हम देखेंगे कि भगवान के जीवनकाल में भी ऐसे अंधविश्वासों में उलझे लोग कैसा धर्महीन विकृत जीवन जी रहे थे। भगवान के उपदेशों से उनकी आंखें खुलीं और उनमें सत्यधर्म का ज्ञान जागा।

वेशभूषा और तिलक-छापे --

अलग-अलग गृहत्यागियों की अलग-अलग वेशभूषा होती, अलग-अलग रंग के वस्त्र-पहनावे होते, अलग-अलग तिलक-छापे लगते और उनका जो बाह्य स्वरूप होता, उसी से अपने आपको धार्मिक मानते। पहले भी ऐसा ही हुआ करता था। एक संप्रदाय के

लोग बल्कल वस्त्र पहनते, दूसरे के मृगचर्म। एक बालों से बने वस्त्र पहनते, दूसरे पेड़ की छाल से बने वस्त्र। और अन्य एक संप्रदाय के गृहत्यागी नितांत निर्वस्त्र ही रहते। जो व्यक्ति जिस संप्रदाय की वेशभूषा पहनता, वह उस पहनावे के कारण अपने आपको बड़ा धार्मिक मानता। एक संप्रदाय के लोग पूरा सिर मुंडाते तो दूसरे के आधा सिर मुंडा कर मोटी चोटी रखते तो कोई पतली चोटी रखते। कोई सिर पर लंबी-लंबी जटाएं रखते और जटाओं के भी भिन्न-भिन्न प्रकार। कोई केवल मूंछ के बाल मुंडा कर, बाकी चेहरे के बाल बढ़ाए रखते और इसी को धर्म मानते।

एक संप्रदाय के गृहत्यागी भिक्षापात्र में भोजन ग्रहण करते तो दूसरे अपनी हथेली में ही भिक्षा लेकर भोजन ग्रहण करते। वे इस कारण अपने आपको धार्मिक मानते।

मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे, गिरजाघर में पूजापाठ करने वालों में स्पष्ट भेदभाव हैं ही। वे सांप्रदायिक भेदभावों को ही प्रकट करते हैं। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र के ये भेदभाव स्पष्ट हैं। वे भी सांप्रदायिकता की इसी दुर्भावना से भरे रहते हैं। इन दुर्भावनाओं के कारण कितना द्वेष, कितनी तू-तू, मैं-मैं, कितनी कटुता और कितना अहंकार! सभी दार्शनिक मान्यताएं, केवल मान्यताएं हैं। न एक को सही, न दूसरी को गलत कहें। लेकिन इन अलग-अलग मान्यताओं में कितना भेदभाव चलता है, कलह विवाद चलता है, खून-खराबा होता है, हत्याएं होती हैं।

भगवान के जीवनकाल में अनेक सांप्रदायिक मान्यताएं प्रचलित थीं। उनमें से एक यह थी कि लोग रात को सोते समय अपनी खटिया के सिरहाने गीला गोबर रखते थे जिसे उठते ही अपने माथे पर लगा कर समीप के किसी तालाब या नदी में स्नान करते हुए इस अंधविश्वास में डूबे रहते थे कि जैसे मेरे माथे पर लगे गोबर का मैल उतर गया वैसे ही इस स्नान से मेरे सारे पाप धुल जायेंगे।

पानी से पाप धुल जाने के अन्य अनेक प्रसंग भी भगवान के जीवनकाल में पाये गये। यथा--

ब्रह्मबंधु नामक एक बूढ़ा ब्राह्मण नित्य प्रातःकाल नदी के जल में डुबकियां लगाया करता था। एक दिन भगवान की एक शिष्या पूर्णा, जो कि सेठ अनाथपिंडिक की दासी थी, उस नदी से पानी भरने के लिए आयी। शरदऋतु थी और उस कड़ाके की ठंड में उसने बूढ़े ब्राह्मण को थरथराते हुए शीतल जल में डुबकियां लगाते हुए देखा। तब उससे पूछा -- ऐसा क्यों कर रहे हो?

इस पर ब्राह्मण ने उत्तर दिया -- इस नदी-स्नान से मेरे जन्म-मरण के सारे पाप धुल जायँगे।

तब पूर्णा ने कहा कि -- यदि यह सच है तो इस नदी की सारी मछलियां, सारे मगरमच्छ, कछुए, मेढक आदि सभी जलचर मरने पर पापों से मुक्त होकर भवसागर से तर ही जायेंगे?

यह सुन कर ब्राह्मण का होश जागा। वह इस मिथ्या मान्यता को त्याग कर भगवान बुद्ध की शरण गया और उनसे नैसर्गिक नियमों पर आधारित सत्यधर्म की विपश्यना विद्या सीख कर सही माने में विकार-विमुक्त हो, भवमुक्त हुआ।

नदी स्नान का एक अन्य प्रसंग -- सुंदरिक भारद्वाज ब्राह्मण ने भगवान से कहा कि क्या आप बाहुका नदी में स्नान के लिए चलेंगे?

भगवान ने कहा-- हे ब्राह्मण! बाहुका नदी में स्नान करने से क्या मिलेगा? बाहुका नदी क्या करेगी?

-- बाहुका नदी बहुजनों द्वारा पवित्र मानी जाती है। इसमें स्नान करते हुए अनेक लोग अपने पूर्वकृत पापों को बहा देते हैं।

तब भगवान ने कहा-- चाहे बाहुका नदी में अथवा गया, सुंदरिका, सरस्वती, प्रयाग या बाहुमती नदी में नित्य स्नान करे, तो भी काले कर्मों वाला मूढ़ व्यक्ति शुद्ध नहीं होता। शुद्धि के लिए विपश्यना के अभ्यास द्वारा अपने भीतर की धर्मगंगा में स्नान करना होता है। इस स्नान द्वारा चित्त शुद्ध होने पर दुष्कर्मों से छुटकारा पाकर, सत्कर्म करने का स्वभाव बन जाता है। यही भवमुक्ति का एकमात्र साधन है। यदि तू इस साधना द्वारा शुद्ध शील का पालन करता रहेगा और दुष्कर्मों से विरत रहेगा तो गया जाकर क्या करेगा? तेरे लिए तो एक लघु जलाशय ही गया समान होगा।

(मज्झिमनिकाय १.१.७९, वत्थसुत्त)

इसी भ्रम को व्यक्त करते हुए भारत के एक परवर्ती संत ने कहा-- **'मन चंगा तो कठौती में गंगा'!**

वर्तमान युग के संतों द्वारा कर्मकांडों के विरोध का एक प्रसंग--

एक बार महान संत प्रथमेश गुरु नानकदेवजी हरिद्वार के गंगातट पर बैठे थे। उन्होंने देखा कि कुछ लोग गंगा में डुबकी लगा कर पूर्व की ओर मुँह किये, उगते सूरज को **अर्घ** दे रहे हैं। ऐसे मिथ्या कर्मकांडों से लोगों को छुटकारा दिलाने के लिए भारत का यह महान संत स्वयं नदी में उतरा और पश्चिम की ओर मुँह करके अंजली में पानी भरकर **अर्घ** देने लगा। यह देख कर लोगों ने उसकी हँसी उड़ाते हुए कहा-- सूरज तो पूर्व में है और तुम पश्चिम में अर्घ क्यों दे रहे हो? इस पर इस दयालु संत ने उन्हें समझाते हुए कहा -- क्या करूं, मेरे खेत तो पश्चिम में ही हैं। मैं अपने खेतों को पानी दे रहा हूं।

निष्प्राण कर्मकांडों की उलझनों में उलझे हुए लोगों ने फिर उस संत की हँसी उड़ाते हुए कहा-- **तुम कैसे नासमझ हो! तुम्हारी अंजलि का यह पानी सुदूर पश्चिम के तुम्हारे खेतों तक कैसे पहुँचेगा?**

संत ने करुणाभरी वाणी में उन्हें उत्तर दिया-- **वैसे ही पहुँचेगा जैसे कि तुम्हारी अंजलि का पानी और भी अधिक दूर सूरज तक पहुँचेगा।**

इसी प्रकार हम देखते हैं कि भारत की संत-परंपरा के अनेक संतों ने इन मिथ्या कर्मकांडों से दूर रहने की ही शिक्षा दी। जैसे कि संत कबीर ने कहा--

मूंड़ मुँड़ाये हरि मिले, सब कोइ लेय मुँड़ाय।
बार बार के मूंड़ते, भेड़ न बैकुंठ जाय।।

स्पष्ट है कि अंधमान्यताओं, अंधविश्वासों और थोथे कर्मकांडों से सही धर्म का कोई संबंध नहीं होता। परंतु संप्रदाय में बँधे हुए अंधविश्वासी लोग स्वयं दुराचरण का जीवन जीते हुए भी इन्हें ही धर्म मानन लगते हैं और अपने आप को यह धोखा देते रहते हैं कि मैं बड़ा धार्मिक हूं और अपने धर्म का पालन कर रहा हूं।

उन दिनों की अनेक मिथ्या मान्यताओं का विवरण हम आगे

चल कर देखेंगे। इस समय तो यही देखना है कि भगवान बुद्ध के शुद्ध धर्म की जो कल्याणी विपश्यना विद्या हमें सौभाग्य से मिली है, उसे हम नितांत शुद्ध ही रखें! उसमें कोई मिलावट न होने दें।

इस मौलिक विद्या की शुद्धता से अपना भी कल्याण होगा तथा अन्य अनेकों का भी।

सबका मंगल हो! सबका कल्याण हो!

कल्याणमित्र,
सत्यनारायण गोयन्का

बुद्ध की शिक्षा (विपश्यना--परियत्ति और पटिपत्ति) में
एक-वर्षीय डिप्लोमा कोर्स (वर्ष- २०११ - २०१२)

विपश्यना विशोधन विन्यास, इगतपुरी और दर्शन विभाग,
मुंबई विश्वविद्यालय के संयुक्त सहयोग से

पाठ्यक्रम – इसमें परियत्ति पटिपत्ति दोनों हैं – पालिभाषा प्रवेश, पालिसाहित्य, बुद्धकालीन स्थापत्य कला, भगवान बुद्ध का जीवन और उनकी शिक्षा। विपश्यना साधना के सिद्धांत और विधि, स्वास्थ्य, शिक्षा, आयुर्वेद, प्रबंधन, सामाजिक विकास आदि के क्षेत्रों में विपश्यना का व्यावहारिक उपयोग तथा बहुत से अन्य विषय।

स्थान – दर्शन विभाग, ज्ञानेश्वर भवन, मुंबई विश्वविद्यालय, विद्यानगरी कैम्पस, कालीना, शांताक्रुज (पूर्व), मुंबई -४०००९८.

समय – प्रत्येक शनिवार को २:३० बजे से ६:३० बजे शाम तक,

कोर्स की अवधि – १६ जुलाई २०११ से ३१ मार्च २०१२

आवेदन पत्र – दर्शन विभाग में (सोमवार से शुक्रवार, ११:०० से २ बजे तक) २० जून से १० जुलाई २०११ तक लिये जा सकते हैं। योग्यता– पुराने एस.एस.सी. और नये एच.एस.सी. (१२ वीं कक्षा उत्तीर्ण)

आवश्यकता – दीपावली की छुट्टी में एक दस-दिवसीय विपश्यना शिविर करना आवश्यक है तभी परीक्षा में बैठने की अनुमति दी जायगी ।

शिक्षण का माध्यम – अंग्रेजी।

संपर्कः १) श्रीमती शारदा संघवी– ९२२३४६२८०५, २) श्री शशीकांत संघवी– ९२२४४५३१८२, ३) श्रीमती बलजीत लाम्बा– ०९३२१९५००६७/ २६२३७१५०, ४) दर्शन विभाग– ०२२-२६५२७३३७

सहायक आचार्य कार्यशालाएं

मध्य क्षेत्र के सभी सहायक आचार्यों से निवेदन है कि १५ से १८ अगस्त तक होने वाली धम्म गिरि, इगतपुरी की सहायक आचार्य कार्यशाला में भाग लेकर इसका लाभ उठाएं। कृपया ध्यान दें कि यह कार्यशाला १५ की प्रातःकाल आरंभ हो जायगी। अतः सभी अभ्यर्थी १४ की रात तक धम्मगिरि पहुँच जायँ। बुकिंग आदि के लिए **संपर्क**-- व्यवस्थापक, **धम्मगिरि, इगतपुरी**..... इसी प्रकार जयपुर में सहायक आचार्य कार्यशाला २ से ६ दिसंबर तक होगी। कार्यशाला २ की सायं आरंभ होगी। **संपर्क-- धम्म थली, विपश्यना केंद्र, जयपुर ...**

विपश्यना साहित्य और सीडीज की ऑनलाइन खरीददारी
Online Purchase (Books and CDs)

विपश्यना संबंधी सारा साहित्य, सीडीज और डीवीडीज, सभी प्रमुख भाषाओं में नेट पर उपलब्ध हैं। साधक इन्हें ऑनलाइन खरीद सकते हैं। नीचे लिखे वेबसाइट को खोलते ही विपश्यना संबंधी जानकारियों की भरपूर सूची और सामग्री दिखायी देगी। किसी प्रकार की सूची देखना है या कोई खरीददारी करनी है, वहां क्लिक करें और वहां के निर्देशानुसार (फालो) करते जायँ।

कुछ साहित्य और विपश्यना पत्रिकाएं आदि (हिंदी, अंग्रजी तथा अन्य भाषाओं में भी) मुफ्त उपलब्ध हैं। उनकी **पीडीएफ (PDF)** फाइल को ऑनलाइन पढ़ सकते हैं, प्रिंट कर सकते हैं या किसी को उसकी लिंक भेज सकते हैं। इंटरनेट की सुविधा का लाभ उठाएं और अपने तथा अनेकों के मंगल में सहायक बनें! मंगल हो! Website: http://www.vridhamma.org/

विश्व विपश्यना पगोडा का भूमि-सौंदर्यीकरण

विश्व-शिरोमणि विपश्यना पगोडा के निर्माण का काम पूरा हुआ। इसकी भव्यता के अनुरूप अब इसके परिसर को भी हरा-भरा और चित्ताकर्षक बनाने की आवश्यकता है ताकि परिसर का सौंदर्य चिरकाल तक बना रहे और आने वाले अधिकाधिक लोगों को चित्त की प्रसन्नता और शांति-सुख के साथ-साथ ऐतिहासिक तथ्यों की जानकारी तथा विपश्यना विद्या सीखने की प्रेरणा प्राप्त हो।

कार्य के दिनों में यहां आने वाले आगंतुकों की संख्या प्रतिदिन लगभग एक हजार तथा अवकाश के दिनों में तीन से पांच हजार तक हो जाती है, जो दिन-प्रति-दिन बढ़ती ही जा रही है। धर्म के नियमों के अनुसार आगंतुकों से कोई प्रवेश-शुल्क नहीं लिया जाता और न ही भविष्य में कभी लिया जायगा। आसपास कोई अन्य सुविधा न होने के कारण आगंतुकों को चाय-नाश्ता आदि के लिए चित्र-प्रदर्शनी के नीचे भू-तल पर एक फूड-प्लाजा की व्यवस्था की जा चुकी है। परंतु इतनी बड़ी संख्या में लोगों को संभालने के लिए अभी बहुत कुछ करना बाकी है।

परम पूज्य गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन ने भारत में पिछले २००० वर्षों से लुप्त हुई कल्याणी विपश्यना विद्या में आदरणीय श्री गोयन्काजी को पुष्ट करके, यहां इसके पुनर्जागरण के लिए और विश्वभर में इसके प्रसार के लिए भेजा। यदि सयाजी ने यह विद्या यहां नहीं भेजी होती तो हमें कैसे मिलती? अतः हम सभी साधक सयाजी ऊ बा खिन के द्वारा किये गये इस महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक कार्य के प्रति आभारी हैं।

उन्हीं गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन के स्मारक के रूप में जो यह पगोडा बना है, वह हजारों वर्षों तक कायम रहे और लोगों के मन में श्रद्धा एवं कृतज्ञता का भाव जागता रहे, यही आज के साधकों की हार्दिक इच्छा है। दो हजार वर्ष पूर्व अशोक ने सोण और उत्तर नामक दो भिक्षुओं के साथ बुद्धवाणी और विपश्यना विद्या को म्यंमा भेजा था। अब लोग सोण और उत्तर को भूल गये, परंतु अशोक का नाम आज भी वहां बड़ी श्रद्धा के साथ लिया जाता है। वैसे ही श्री गोयन्काजी को भी याद रखना है लेकिन यदि उन्हें भूल जायँ तब भी शुद्धधर्म और विशुद्ध बुद्धवाणी भारत को वापस लौटाने वाले सयाजी ऊ बा खिन को कदापि नहीं भुलाया जा सकता।

अब तक इस विश्व विश्रुत पगोडा से संबंधित यहां जितना भी कार्य हुआ, वह विपश्यी साधकों एवं बुद्धभक्तों के स्वेच्छापूर्ण सहयोग से ही संभव हुआ। इस विशाल पगोडा के चारों ओर की भूमि तथा अन्य छोटे-मोटे सौंदर्यीकरण के लिए भारत और विश्वभर में फैले हुए सभी साधक अपनी श्रद्धा एवं शक्ति के अनुसार कम या अधिक, सहयोग देकर इसके बाकी बचे हुए कार्यों को पूरा करने में भागीदार बन कर, पुण्यलाभी बनेंगे!

दान के लिए पता -- **ग्लोबल विपश्यना फाउंडेशन**, खीमजी कुँवरजी एंड कं., सुइट-५२, बांबे म्युचुअल बिल्डिंग, सर पी.एम. रोड, फोर्ट, मुंबई-४००००१. फोन- ०२२-२२६६२५५०. **ऑनलाइन** दान- **बैंक ऑफ इंडिया**, स्टॉक एक्सचेंज शाखा, मुंबई-४०००२३. **अकांउट नं. 008610100011250**, and for foreign money transfer **SWIFT** Code Number-- **BKIDINBBABLD;** to **Global Vipassana Foundation, BANK OF INDIA**, Stock Exchange Branch, Jejeebhoy Towers, Dalal Street, Fort, Mumbai 400 023.

(अधिक जानकारी के लिए देखें निम्न वेबसाइट)
http://www.globalpagoda.org/Donation.aspx?ParentId=6;

विनीत, ***वल्लभ भंसाली,*** *अध्यक्ष,* ***ग्लोबल विपश्यना फाउंडेशन,*** *मुंबई।*

Registered No. NSK/46/2009-2011

WPP Postal License No. AR/Techno/WPP-05/2009-2011

गुरुपूर्णिमा के उपलक्ष्य और पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में 'ग्लोबल विपश्यना पगोडा' पर एक दिवसीय शिविर

१७ जुलाई, २०११, रविवार, समयः प्रातः ११ बजे से अपराह्न ४ बजे तक, **'ग्लोबल विपश्यना पगोडा'** के बड़े धम्मकक्ष (डोम) में हजारों साधकों और **पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य** में **एक दिवसीय** शिविर का आप भी लाभ उठाएं। कृपया ध्यान दें कि इस विशाल शिविर की व्यवस्था सुचारुरूप से हो और आपको किसी प्रकार की असुविधा न हो, इसलिए **बिना बुकिंग कराये न आएं। बुकिंग संपर्क: मो. 098928 55692, 09892855945, फोन नं.: 022-28451170, 33747543, 33747544**, (**फोन बुकिंग समयः** प्रातः ११ से सायं ५ तक, प्रतिदिन) **ईमेलः** Registration-- oneday@globalpagoda.org;

Online Registration: www.vridhamma.org

अतिरिक्त उत्तरदायित्व

आचार्य

१. श्री रमणिकलाल मेहता, भुज.
बड़ौदा क्षेत्र की सेवा के साथ धम्मसिंधु के आचार्य की सहायता.

वरिष्ठ सहायक आचार्य

1. Ms. Nuntiya Abhabhirama, *Thailand, Training and co-ordination of Dhamma servers*
2. Ms. Pawinee Boonkasemsanti, *Thailand, To assist the teacher in charge of Dhamma Kamala.*
3. Ms. Puangpaka Bunnag, *Thailand, Production of all course materials*
4. Mr. Vitcha Klinpratoom, *Thailand To assist the area teachers in planning and construction.*
5. *Mr. Somnuk Sattayanon, Thailand, To assist the teacher in charge of Dhamma Simanta*

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

१. सुश्री प्रेम गर्ग, पंचकुला
2. Mr.Toa Sunaga, *Japan*
3 Mr. Eric Sedlacek, *USA*

बालशिविर शिक्षक

१. श्रीमती उमा मानसिंघानी, आनंद, गुज.
२. सुश्री मुकुंदबाला वडवल, अहमदाबाद
३. श्रीमती उर्वशी पटेल, अहमदाबाद
4. U Tan Win Tint, *Myanmar* 5. U Nan Nwe, *Myanmar*. 6. U Win Myint Aung, *Myanmar* 7. Daw Ohnmar Thin, *Myanmar* 8. Daw Ei Yadanar Myint Oo, *Myanmar.* 9. Daw Wai Htike Htike Soe, *Myanmar* 10. Daw Ngwe Kyi, *Myanmar*. 11. Daw HLA PO, *Myanmar*. 12. U Cho Win, *Myanmar*, 13.U Aung Lwin Htoo, *Myanmar*. 14. Aung Myo Kyaw, *Myanmar* 15. Mrs Kittima Cluaywong, *Thailand* 16. Mr. Urvish Vanzara, *USA*. 17. Mr. Sean Michael Kerr, *USA*. 18. Mr. Jon Tom Woon, *USA*

दोहे धर्म के

धर्म न हिंदू बौद्ध है, धर्म न मुस्लिम जैन।
धर्म चित्त की शुद्धता, धर्म शांति सुख चैन॥

यही धर्म की परख है, यही धर्म का माप।
जन जन का मंगल करे, दूर करे संताप॥

हिन्दू मुस्लिम बौद्ध हो, जैन इसाई होय।
रागमुक्त जो भी हुआ, वीतराग है सोय॥

संप्रदाय ना धर्म है, धर्म न बने दिवार।
धर्म सिखाए एकता, धर्म सिखाए प्यार॥

बढ़ा धर्म के नाम पर, संप्रदाय पुरजोर।
जन जन मन व्याकुल हुआ, दुख छाया सब ओर॥

संप्रदाय का मद बढ़े, धर्म तिरोहित होय।
अपना भी अनहित करे, जन जन अनहित होय॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा०) लिमिटेड
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोनः 2493 8893, फैक्सः 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

बोलै गरब गुमान स्यूं, मेरो धरम महान।
संप्रदाय नै समझ रह्यो, धरम, मूढ नादान॥

करम छोड़ कर सबद ही, प्रिय लागै ज्यूं प्राण।
संप्रदाय सबळो हुयो, धरम हुयो म्रियमाण॥

संप्रदाय अर धरम मँह, जो समझै ना फर्क।
बो भोळो, सद्धरम रो, बेड़ो करसी गर्क॥

जात-पांत रो बावळो, सीस चढायो भूत।
धरम छूटग्यो साचलो, रहग्यी छूआछूत॥

संप्रदाय रो संखियो, जात-पांत रो ज्हैर।
सेवन करतो ही रह्यो, कठै खेम, सुख, खैर?

जात-पांत रो, बरण रो, किसो'क गरब गुमान।
मूढ होयग्या, धरम रो, रह्यो न नाम-निसाण॥

एक साधक
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-422403, दूरभाष : (02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, 69- बी रोड, सातपुर, नाशिक-422007. **बुद्धवर्ष** 2555, **ज्येष्ठ पूर्णिमा, 15 जून, 2011**

वार्षिक शुल्क रु. **30/-**, US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. **500/-**, US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. 19156/71. Registered No. NSK/46/2009-2011**

Licenced to post w**ithout Prepayment of postage** -- WPP Postal Licence No. AR/Techno/WPP-05/2009-2011
Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086, 243712, 243238. **फैक्स :** (02553) 244176
Email: info@giri.dhamma.org
Website: www.vridhamma.org